

Rapid Fire (करेंट अफेयर्स): 02 जून, 2023

डेक्कन क्वीन ट्रेन

डेक्कन क्वीन ट्रेन ग्रेट इंडियन पेननिसुला रेलवे के इतिहास में एक विशेष स्थान रखती है। यह ट्रेन सेवा 1 जून, 1930 को शुरू की गई तथा बाद में मध्य रेलवे के रूप में जाना गया। अपने 92 वर्ष के इतिहास के दौरान ट्रेन परिवहन के साधन से एक ऐसी संस्था में बदल गई है जो यात्रियों की पीढ़ियों को जोड़ती है। इन वर्षों में इस क्षेत्र में अनेक प्रकार की प्रगति देखी गई जैसे कि एक डाइनिंग कार की शुरुआत, रोलर बियरिंग कोच और ऑक्सफोर्ड ब्लू कलर स्कीम को अपनाना। इसने भारत की पहली सुपरफास्ट, लंबी दूरी की इलेक्ट्रिक-चालित, वेस्टबिल ट्रेन के रूप में रिकॉर्ड स्थापित किया। इस ट्रेन में एक समर्पित महिला कार भी थी। वर्तमान में डेक्कन क्वीन पुणे और मुंबई के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों के लिये समयबद्धता और लोकप्रियता के चलते प्रसिद्ध है।



कच्चे तेल के अपशिष्ट जल की बहाली के लिये हरति उपाय

इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन साइंस एंड टेक्नॉलोजी (IASST), गुवाहाटी के वैज्ञानिकों ने कच्चे तेल के अन्वेषण और प्रसंस्करण के दौरान नरिमुक्त होने वाले उपोत्पाद जल के निपटान से उत्पन्न होने वाली पर्यावरणीय चुनौतियों को दूर करने में महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। उपोत्पाद के रूप में निकले हुए जल में हानिकारक घटक और रसायन होते हैं जो नदियों एवं नालों में बहाए जाने पर जल की गुणवत्ता को खराब कर सकते हैं और **जलीय जीवन को क्षति पहुँचा सकते हैं**। अनेक प्रयोगों तथा अध्ययनों के माध्यम से IASST के शोधकर्त्ताओं ने **पौध आधारित बायोमैटेरियल, बायोसर्फैक्टेंट (रोगाणुओं के द्वितीयक मेटाबोलाइट्स) और NPK उर्वरक का मशिरण तैयार किया है**। इस नवोन्मेषी मशिरण में कम समय-सीमा के भीतर उपोत्पाद के रूप में निकले हुए जल को पहले जैसा किया जा सकता है। टीम ने इस विकास कार्य पर एक भारतीय पेटेंट दायर किया है। यह "अदभुत मशिरण" न केवल जल के बहाव से पर्यावरण प्रदूषण को रोकता है बल्कि **उपचारित जल को विभिन्न प्रयोजनों के लिये पुनः उपयोगी बनाता है**। इस दृष्टिकोण का उपयोग करके जल के हानिकारक प्रभावों को कम किया जा सकता है जिससे एक सतत भवषिय का नरिमाण किया जा सकता है। इसके अलावा उपचारित जल फसल उत्पादन को बढ़ाकर तथा बढ़ती वैश्विक खाद्य मांग को पूरा करके **हरति क्रांति** में योगदान दे सकता है।

ई-सगिरेट-वापगि की जटलिताएँ: भारत का दृष्टिकोण और चर्चाएँ

भारत में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने सगिरेट और अन्य तंबाकू उत्पाद अधिनियम, 2004 के तहत संशोधन नियमों पर जोर देते हुए **वशिव तंबाकू नषिध दविस** पर तंबाकू वशिधी स्वास्थय संदेशों और चेतावनयिों को बढ़ावा देने के लयि **OTT प्लेटफॉरमों** को नरिदेशति कयिा है। हालाँकि नयिमों में ई-सगिरेट या निकोटीन युक्त वेपस शामिल नहीं हैं, जनिहें स्वास्थय और सुरकषा चर्चाओं के कारण वर्ष 2019 में प्रतर्बिधति कर दयिा गया था। प्रतर्बिध के बावजूद ये उपकरण कालाबाज़ारी के माध्यम से देश में प्रवेश कर रहे हैं, वशिष रूप से चीन से। **ई-सगिरेट**, जसिसे इलेक्ट्रॉनिक सगिरेट के रूप में भी जाना जाता है और वेपस इलेक्ट्रॉनिक उपकरण हैं जो एक तरल घोल (ई-तरल) को वाष्पीकृत करते हैं जसिमें निकोटीन, सुगंध तथा अन्य रसायन होते हैं। उनहें तंबाकू को जलाए बना पारंपरिक सगिरेट पीने के अनुभव का अनुकरण करने के लयि डज़ाइन कयिा गया है **ई-सगिरेट और वेप धुएँ** के बजाय वाष्प का उत्पादन करते हैं, जसिका उपयोगकर्ता द्वारा उपयोग कयिा जाता है।

और पढ़ें... **वशिव तंबाकू नषिध दविस**

भारत के पश्चिमी घाट में नरिजलीकरण सहषिणु संवहनी पादप: कृषि अनुप्रयोगों हेतु संभावति

भारत का जैवविधिता हॉटस्पॉट, **पश्चिमी घाट**, नरिजलीकरण सहषिणु संवहनी पादपों (डेसीकेशन टोलेरेंट वैस्कुलर प्लांट्स) की 62 प्रजातयिों का घर है। नरिजलीकरण सहषिणु संवहनी पादप (डेसीकेशन टोलेरेंट वैस्कुलर प्लांट्स- डीटी) अत्यधिक नरिजलीकरण का सामना करने में सक्षम हैं क्योकनिमें वदियमान जल की मात्रा का 95% तक अपव्यय हो जाने के बाद भी वे जल के पुनरुपयोग से स्वयं को पुनर्जीवति कर लेते हैं। यह अनूठी क्षमता उनहें ऐसे प्रतर्कूल एवं शुष्क वातावरण में जीवति रहने में सक्षम बनाती है जसिमें अधिकांशतः अन्य पौधे जीवति ही नहीं रह सकते। हाल ही में हुए अध्ययन **वेशचिमी घाटों में सहषिणु संवहनी प्रजातयिों की प्रचुरता पर प्रकाश डाला है**, जो पहले से ज्ञात नौ प्रजातयिों से भी अधिक है। अनुसंधान इन प्रजातयिों की एक सूची प्रदान करता है, जसिमें 16 प्रजातयिों भारतीय स्थानिक (इंडियन एंडेमिक) हैं और 12 पश्चिमी घाट के बाहरी हसिसों के लयि वशिषिट हैं। यह अध्ययन वशिष रूप से इन लचीले पौधों के लयि महत्त्वपूर्ण नविस स्थान के रूप में **आउटक्रॉप्स (चट्टानी भू-भागों) में आंशिक रूप से घने वनों की पहचान करता है**। डीटी पौधों की नौ प्रजातयिों को नए रूप में अधसूचति कयिा गया है, वैश्विक परपिरेकषय में ट्राइपोगोन कैपलिटस एक एपफाइटिक डीटी एंजियोस्पर्म के प्रथम रिकॉर्ड का प्रतर्निधित्व करता है। **सहषिणु संवहनी पादपों** का अध्ययन करके शोधकर्त्ता पश्चिमी घाट की जैवविधिता और पारसिथतिकी में इन प्रजातयिों के संरक्षण में योगदान करते हैं। इसके अतरिकित नरिजलीकरण को सहन करने की उनकी क्षमता के पीछे के तंत्र को समझने से कम जल की आवश्यकता वाले शुष्क प्रतर्शिधी फसलों को वकिसति करने का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। यह अध्ययन **कृषि अनुप्रयोगों के लयि वशिष रूप से जल की कमी वाले क्षेत्रों में नई संभावनाओं को वकिसति करता है**।

और पढ़ें... **पश्चिमी घाट**

PDF Refernece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/rapid-fire-current-affairs-02-june,-2023>